देवसेना का गीत

1. आह! वेदना मिली विदाई!
मैंने भ्रम–वश जीवन संचित,
मधुकरियों की भीख लुटाई।
छलछल थे संध्या के श्रमकण,
आँसू–से गिरते थे प्रतिक्षण।
मेरी यात्रा पर लेती थी–
नीरवता अनंत अँगड़ाई।

प्रसंग :– प्रस्तुत काव्यांश 'देवसेना का गीत' का एक अंश है। यह गीत जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित नाटक 'स्कंदगुप्त' से अवतरित है। नाटक की नायिका देवसेना जीवन की संध्यावेला में अपने यौवनकाल का स्मरण करती है और अपने अनुभवों में अर्जित वेदनामय क्षणों को याद करती है। उसकी आँखों में आँसुओं की अजस्र धारा बहने लगती है।

व्याख्या :– देवसेना अपने विगत जीवन पर दृष्टिपात करती है तो उसके हृदय में वेदना की हूक–सी उठती है। इस जीवन में उसे वेदना के अतिरिक्त और कुछ भी न मिल सका। वह यौवनकाल में स्कंदगुप्त का प्रेम पाने में असफल रही। वह अपने जीवन की संचित कमाई (पूँजी) को बचा नहीं पाई। यही उसके जीवन की विडंबना है। अब वह स्वयं से कहती है–हृदय की कोमल कल्पना सो जा। आज मैं अपने जीवन के भावी सुख, आशा और आकांक्षा–सबसे विदा लेती हूँ। यौवन के कारण तब वह भ्रम में जीती थी। यह कारण था कि उसने अपने पास संचित सभी कुछ ऐसे लुटा दिया जैसे कोई मधुकारियों की भीख को

Scanned with CamScanner

लुटा देता है। वह अपने लिए कुछ भी बचाकर नहीं रख पाई। अब वह अपनी आशा–आकांक्षाओं आदि सभी से विदा लेती है।

देवसेना अपने जीवन के संध्याकाल में अपने विगत जीवन पर प्रायश्चितस्वरूप आँसू बहाती है। संध्या के श्रमकण आँसू के समान हर समय गिरते रहते थे। उसकी जीवन–यात्रा में कभी न मिटने वाली खामोशी समाई हुई थीं। वह किसी की न हो पाई। उसका जीवन एकाकी होकर रह गया।

Scanned with CamScanner

2. श्रमिक स्वप्न की मधुमाया में,
गहन–विपिन की तरु–छाया में,
पथिक उनींदी श्रुति में किसने–
यह विहाग की तान उठाई।
लगी सतृष्ण दीठ थी सबकी,
रही बचाए फिरती कबकी।
मेरी आशा आह! बावली,
तूने खो दी सकल कमाई।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित नाटक 'स्कंदगुप्त' से अवतरित है। इसें हमारी पाठ्यपुस्तक में **'देवसेना का गीत'** शीर्षक के अंतर्गत संकलित किया गया है। नाटक की नायिका देवसेना जीवन की संध्यावेला में अपने विगत जीवन पर दृष्टिपात करती है।

व्याख्या :– यौवनकाल में स्कंदगुप्त ने देवसेना के प्रति उपेक्षा दर्शाई थी, पर अपने जीवन के अंतिम मोड़ पर उन्होंने देवसेना के सम्मुख अपना प्रणय–निवेदन किया था, लेकिन देवसेना इसके लिए तैयार नहीं हुई। अब तक तो उसकी मोहक छाया भी स्वप्न बनकर रह गई है। जिस प्रकार कोई पथिक थककर वन में पेड़ों की छाया में विश्राम कर रहा होता है और उसे उनींदी हालत में कोई मधुर राग की तान सुनाई पड़ जाए, उसी प्रकार देवसेना को भी स्कंदगुप्त का प्रणय–निवेदन विहाग–राग के समान प्रतीत होता है।

यौवनावस्था में उसकी ओर सभी लोगों की तृष्णा भरी नजरें लगी रहती थीं। वह स्वयं को उनसे बचाए फिरती थी। इस प्रयास के बावजूद उसने अपने जीवन की सारी कमाई (पूँजी) गँवा दी। वह उसे बचा नहीं पाई। यही उसके जीवन की विडंबना है और यही उसकी वेदना का मूल कारण है।

Scanned with CamScanner

देवसेना का गीत

प्रश्न 1. "मैंने भ्रमवश जीवन संचित मधुकरियों की भीख लुटाई" – पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : देवसेना स्कंदगुप्त को पाना चाहती थी, पर उस समय स्कंदगुप्त उसकी ओर आकर्षित न होकर विजया को पाने के लिए प्रयासरत थे। देवसेना स्कंदगुप्त के प्रति प्रेम का भ्रम पाले हुए थी। उसे अपने जीवन में जो कुछ भी उपलब्ध हुआ था, उसे वह सँभाल नहीं पाई। वह अपने जीवन की सारी पूँजी को लुटा बैठी। बाद में आगे चलकर वह अपनी इस भूल पर पछताती है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 2. कवि ने आशा को बावली क्यों कहा है ?

उत्तर : कवि ने आशा को बावली इसलिए कहा है क्योंकि व्यक्ति आशा के भरोसे जीता है, सपने देखता है। प्रेम में आशा की डोर पकड़कर ही वह अपने मोहक सपने बुनता है। भले ही उसे असफलता ही क्यों न मिले। उसकी धुन बावलेपन की स्थिति तक पहुँच जाती है। आशा व्यक्ति को (विशेषकर प्रेमी को) बावला बनाए रखती है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 3. "मैंने निज दुर्बल···होड़ लगाई" इन पंक्तियों में 'दुर्बल पर बल' और 'हारी होड़' में निहित व्यंजना स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 'दुर्बल पद बल' में यह व्यंजना निहित है कि प्रेयसी (देवसेना) अपनी शक्ति–सीमा से भली–भाँति परिचित है। उसे ज्ञात है कि उसके पद (चरण) दुर्बल हैं, फिर भी परिस्थिति से टकराती है।

'हारी होड़' में यह व्यंजना निहित है कि देवसेना को अपने प्रेम में हारने की निश्चित्ता का ज्ञान है, इसके बावजूद वह प्रलय से लोहा लेती है। इससे उसकी लगनशीलता का पला चलता है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 5. देवसेना की हार या निराश के क्या कारण हैं ?

उत्तर : देवसेना की हार या निराश के कारण ये हैं –

– हूणों के आक्रमण में देवसेना का भाई बंधुवर्मा (मालवा का राजा) तथा अन्य परिवार जन वीरगति पा गए थे। वह अकेली बच गई थी।

– वह भाई के स्वप्नों को साकार करना चाहती, पर उस दिशा में कुछ विशेष कर नहीं पाई थी।

Scanned with CamScanner

– देवसेना यौवनावस्था में गुप्त सम्राट स्कंदगुप्त के प्रति आकर्षित थी और उसे पाना चाहती थी, पर इस प्रयास में वह असफल रही, क्योंकि उस समय स्कंदगुप्त मालवा के धनकुबेर की कन्या विजया की ओर आकर्षित थे। देवसेना में अपनी उपेक्षा के कारण निराशा की भावना घर कर गई थी।

– देवसेना को वृद्ध पर्णदत्त के आश्रम में गाना गाकर भीख तक माँगनी पड़ी थी।

Scanned with CamScanner